मूल्य: १०.०० रूपया

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्ष : ३० अंक : ०१ अप्रैल २००६

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० अंक - ०१, अप्रैल २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	आदिनाथ ऋषभदेव और अष्टापद शोध ग्रन्थ (भाग-२)	डॉ. लता बोथरा	१५

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

आदिनाथ ऋषभदेव और अष्टापद शोध ग्रन्थ

भूमिका

प्राच्य विद्याविशारद प्रो. मैक्समूलर ने अपने निबन्ध "India What Can It Teach Us" 'भारत हमें क्या सिखा सकता है' में लिखा है "यदि हमसे पूछा जाय कि अन्तरिक्ष के नीचे वह कौन सा स्थान है जहाँ मानव के मानस ने अपने अन्तराल में निहित ईश्वर प्रदत्त अन्यतम सद्भावों को पूर्ण रूप से विस्तृत किया, गहराई में जाकर जीवन की कठिनतम समस्याओं का विचार किया है और उनमें से अनेकों को सुलझाया है, जिसको जानकर प्लेटो और कान्ट का अध्ययन करने वाले मनीषी भी आश्चर्य चकित होकर रह जाय, तो मेरी ऊंगली भारत की ओर उठेगी। मैक्समूलर के इस कथन से मन में अनेकों जिज्ञासाएं उठती है कि भारत में ही ऐसी क्या विशेषता है और यह कैसे और कहाँ से आयी। अन्य क्षेत्रों में यह विशेषता क्यों नहीं है भारत को ही महान् क्यों कहा गया है यही खोज करने के लिये हमें अपनी संस्कृति के मूल स्रोत को जानना होगा। जिस प्रकार वृक्ष का अस्तित्व उसकी जड़ में निहित रहता है और जड़ मिट्टी के नीचे होती है जिसको देखने के लिये हमें मिट्टी को कुरेदना पड़ता है इसी तरह सभी संस्कृतियों का मूल स्रोत एक है जिसको जानने के लिये ऐतिहासिक तथ्यों को सत्य की कसौटी पर परखकर सामने लाना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने बहुत ही सही लिखा है "सत्य की खोज मानव का सबसे पवित्र कार्य है और उसका प्रचार मानव का

कर्तव्य" Search for the truth is the noblest occupation of man; its publication is a duty."

सभी संस्कृतियों का उत्कर्ष उसके प्राचीन इतिहास पर निर्भर होता है इसलिये हर धर्म और जाति ने अपने को चाहे वह वैदिक, बौद्ध, ईसाई या मुस्लिम हो प्राचीन सिद्ध करने की चेष्टा में आदि मूल स्रोतों को नष्ट करने, परिवर्तन करने या अनदेखा करने की कोशिश की जो आज भी चली आ रही है। इस विषय में, कर्नाटक के सन्दर्भ में इतिहासकार रोमिला थापर का यह वक्तव्य बहुत महत्वपूर्ण है जो उन्होंने हिन्दुस्तान टाइम्स के रिपोर्टर अमित सेनगुप्ता को दिया— "We are now finding evidence of shaivite attacks on Jain Temples, the destruction of Temples, the removal of idols, the re-emplanting of shaivite images in their place, this is a regular occurrence where by even Temples were destroyed or Jain monuments were destroyed by Hindu particularly by shaivites."

प्रख्यात् बौद्ध साहित्य एवं तंत्र शास्त्र विशेषज्ञ डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची ने अपनी कई एक स्थापनाओं के द्वारा खोतान एवं उसके आस-पास के इलाकों के खण्डहरों में जो मूर्तियां मिली उस पर अपना विवेचन करते हुए उन्हें जैन मूर्तियों के सादृश्य बताया। उन्होंने सिलवा लेवी के साथ पालि और प्राकृत के अध्ययन के साथ-साथ बौद्ध सूत्रों के समानान्तर उन जैन सूत्रों को भी खोज निकाला जिसके कारण अनेक कट्टरवादी प्राच्य विद्वानों ने उनका विरोध किया पर उनकी सारी स्थापनाएं उस वक्त सच दिखाई देती है जब एम. ए. स्टाइन के भ्रमण वृत्तान्तों को पढ़कर उन सच्चाइयों को हम देख पाते है। वस्तुतः

जैन धर्म के अवशेष सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व भर में फैले हुए है जिसके लिये डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची कहते है कि सच्चाई को देखने के लिये सिर्फ चमड़े की आँख ही नहीं बल्कि एक निरपेक्ष मन की आँख भी होनी चाहिये। एक ऐसा सच जो हर समय, हर तरफ अपना साक्ष्य प्रदान करता है उसे अलग से प्रमाणित करने की जरूरत मैं नहीं समझता हूँ। (प्रधान अतिथि मूर्तिकला विशेषज्ञ डॉ. एस. के. सरस्वती के समक्ष रवीन्द्र जयन्ती के उपलक्ष्य में विश्व भारती में दिया गया भाषण)

प्राचीन समय से ही मक्का बहुत ही पवित्र और पूज्य स्थान माना जाता रहा है। दूर दूर से यात्री इस तीर्थ के दर्शन को आते थे। काबा का मन्दिर बहुत ही प्रसिद्ध था, जहाँ ३६० मूर्तियां थी। सन् १९४५ में विक्रम संवत् २००० उज्जयिनी में मनाया गया। उस समय हिन्दू और मुसलमान दोनों द्वारा सम्मिलित रूप से एक लेख जारी किया गया था जिसमें यह उल्लेख था कि अरब का अन्तिम भारतीय राजा सम्राट विक्रमादित्य था जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी। यह राजा इतना प्रभावशाली था कि उसकी प्रशंसा में अरब कवि जिरहम विन्टोई ने कविता की रचना की थी। यह कवि मोहम्मद साहब से १६५ वर्ष पहले और विक्रम के शासन के ५०० वर्ष बाद हुआ था। उस समय कविता की प्रतियोगिता की परम्परा थी और जो कविता पुरस्कार प्राप्त करती उसे काबा के मन्दिर में स्वर्ण तश्तरी में खुदवाकर लगाया जाता था। विन्टोई की यह कविता स्वर्ण तश्तरी पर खुदी हुई है और काबा के मन्दिर के अन्दर लगायी गयी थी। यह कविता मूल भाषा में और उसका अंग्रेजी अनुवाद दोनों उपलब्ध है। जैन साहित्य में भी विक्रमादित्य के विषय में सिद्धसेन दिवाकर और महाकालेश्वर मन्दिर के संदर्भ में अनेक जनश्रुतियां तथा उल्लेख

मिलते है। शार्लोट क्राउज़ ने विक्रमादित्य और सिद्धसेन दिवाकर का अपने लेख में वर्णन किया है। जबकि इतिहास इस महान् सम्राट के विषय में अभी तक अंधेरे में हैं।

भारतीय इतिहास में कल्हण की राजतरंगिणी बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत मानी जाती है। स्वयं कल्हण ने लिखा है कि उसने राजतरंगिणी की रचना बिना किसी विद्वेष और पक्षपात के लिखी है। इतिहासकार आर. सी. मजूमदार ने भी इसके विषय में कहा है This is the only work in ancient Indian literature that may be regarded as an Historical text in the true sense of the word.

राजतरंगिणी में लगभग १३०० ई. पू. का वर्णन है। जिसके अनुसार-

प्रपौत्र शकुनेस्तस्य भूपतेः प्रपितृव्यज
अथा वहदशोकांख्यः सत्य संधो वसुंधराम्
यः शांत वृजिनो राजा प्रपन्नो जिनशासनम्
शुष्कलेत्र वितस्तात्रौ तस्तार स्तूपमंडलै
धर्मारण्य विहारान्तर्वितस्तात्रपुरेभवत्
यत्कृतं चैत्यमुसेधावधि प्राप्त्यक्षमेक्षणम्

१ :१०१, १०२, १०३

M.A. Stein ने इसका अनुवाद करते हुए लिखा है– "Then the son of that king's grand uncle and great grand son of Sakuni The faithful Asoka reigned over the earth. This king who had freed himself from sins and had embraced the doctrine of Jina, covered Suskaletra and Vitastara with numerous stupas... ." अर्थात् राजा शकुनी के प्रपौत्र सत्य प्रतिज्ञ अशोक महान् ने काश्मीर की वसुन्धरा पर राज्य किया। उसने जिन शासन को

स्वीकार किया था तब उसके पाप शान्त हो गये थे। शुष्कलेक तथा वितस्तात्र इन दोनों नगरों को उसने जैन स्तूप मंडलों से आच्छादित कर दिया था। अनेक जैन मंदिरों तथा नगरों का निर्माण किया जिनमें विस्तात्र पुरी के धर्मारण्य विहार में इतना ऊँचा मन्दिर बनवाया था कि जिसकी ऊँचाई को आँखे देखने में असमर्थ हो जाती थी। इसकी व्याख्या करते समय सिर्फ M.A. Stein तथा अन्य विदेशी इतिहासकारों ने ही नहीं भारतीय इतिहासकारों ने भी इस अशोक को मौर्य वंशी अशोक मान लेने की भूल की है। कुछ मास पूर्व इतिहास के एक प्रो. से मैं मिली तो मैंने राजतरंगिणी का यह श्लोक उनको पढ़ने के लिये दिया। उन्होंने अशोक का नाम पढ़ा तो बोले यहाँ जिनशासन् शब्द का अर्थ बौद्ध शासन होना चाहिये क्योंकि अशोक बौद्ध था। मैंने उनसे इस विषय पर विस्तारित रूप से चर्चा की तब उन्होंने अपनी बात में छिपे भ्रम को स्वीकार किया। इतिहास का विशुद्ध रूप से अध्ययन अनेकान्त दृष्टि से ही सम्भव है तभी सही तथ्य हमारे सामने आ पायेंगे। राजतरंगिणी का यह एक ऐसा अकाट्य प्रमाण है जो चौदहवीं शती ई० पू० में जैन धर्म के प्रभाव की पुष्टि करता है।

उड़ीसा के महान् सम्राट महाराज खारवेल मेघवाहन के राज्यकाल के १३वें वर्ष तक का वर्णन खण्डगिरि-उदयगिरि के शिलालेखों में मिलता है। लेकिन उसके बाद का वर्णन कल्हण की राजतरंगिनी में मिलता है। राजतरंगिनी में सिर्फ मेघवाहन का ही नहीं वरन् उसके बाद की चार पीढ़ियों का वर्णन किया गया है। महामेघवाहन ने उत्तरापथ में काश्मीर पर विजय पताका फहराकर वहाँ अहिंसा का प्रचार किया था। डलहौजी से श्रीनगर के पैदल रास्ते में आज भी सैकड़ों मंदिरों के खंडहर वीरान पड़े हुए दिखायी पड़ते हैं। जिन्हें देव मंदिर कहा जाता है। A.H. Francke ने अपनी किताब A History of Western Tibet में लिखा

है– " When Hiuen Tsang visited Kashmir, he found the mass of the population addicted to the devas, and the monasteries few and partly deserted." श्री नरेन्द्र सहगल ने पांचजन्य में काश्मीर सम्बन्धी अपने लेख में खारवेल के विषय में लिखा है कि **प्राणी रक्षा हेतु स्वयं की बलि को प्रस्तुत होने वाला मेघवाहन अपने आदर्शों से** काश्मीर को ऊँचा उठा ले गया। Stein ने भी खारवेल के विषय में कहा है– Then he who was sincere in the observance of the sacred law, went forth for the conquest of the world so that he might impose upon the other kings his prohibition against the killing. His ambition for conquest, in which valour was laudably with care for keeping the people free from fear, deserved to be envied even by a Jina.

पुष्यमित्र को हराकर कलिंग जिन की मूर्ति को वापिस कलिंग में लाकर स्थापित करने वाले दिग्विजयी सम्राट खारवेल के विषय में के. राधाकृष्ण लिखते हैं— काश्मीर ने सम्राट मेघवाहन जैसे दिग्विजयी सम्राट उत्पन्न किये जिसकी सैनिक वाहिनियों ने आधे विश्व पर विजय किया और विजित प्रदेशों को एक शर्त पर वापिस किया कि वहां पर प्राणी हिंसा नहीं होगी। लेकिन यह बड़े खेद का विषय है कि ऐसे महान सम्राट को भारतीय इतिहास के पन्ने में कोई स्थान क्यों नहीं मिला? क्योंकि वह जिनधर्म के अनुयायी थे। इतिहास मेरा प्रिय विषय था लेकिन अपने विद्यार्थी जीवन में खारवेल के विषय में न कभी पढ़ने में आया और न ही सुनने में।

किसी भी संस्कृति का इतिहास जानने के दो प्रमुख साधन होते है। साहित्यिक और पुरातात्विक। इन दोनों उपलब्ध स्त्रोतों से यह

निश्चित तौर पर प्रमाणित होता है कि ऋषभ संस्कृति ही प्राचीन मूल संस्कृति थी। राजतरंगिनी, खारवेल के शिलालेख, मथुरा के आयागपट्ट और मूर्तियां, फतेहपुर सीकरी का अन्वेषण यह सब प्राचीन अर्हत संस्कृति को ही परिलक्षित करते है। एक सबसे महत्वपूर्ण बात इस सन्दर्भ में ऋषभदेव के निर्वाण स्थल अष्टापद से सम्बन्धित है। तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की जगह प्राचीनकाल से ही तीर्थ मानी जाती रही है। पंचकल्याणकों में निर्वाणकल्याणक का महत्व अधिक माना जाता है। ऋषभदेव की निर्वाण भूमि अष्टापद सबसे प्राचीन तीर्थ है। जहाँ उनके पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत द्वारा मन्दिरों स्तूपों का निर्माण करवाया गया था जिनके उल्लेख जैन साहित्य में प्रचुर रूप से मिलते है।

अष्टापद का कैलाश के रूप में तथा शिव के रूप में वर्णन मिलता है। वास्तव में यह शिव क्षेत्र है क्योंकि तिब्बती भाषा में शिव का अर्थ मुक्त और लिंग का अर्थ क्षेत्र होता है। अष्टापद या कैलाश तिब्बत में है अतः तिब्बत के प्राचीन धर्म के विषय में अध्ययन आवश्यक है। बुद्ध धर्म वहाँ ८वीं शताब्दी के बाद आरम्भ हुआ। प्राचीन काल के कुछ चित्र एवं कलाकृतियां प्राप्त हुए है। जिसके विषय में ए. एच. फ्रेन्क ने अपनी किताब 'History of Western Tibet' में लिखा हैं 'These painting represents Buddhist saints often nude and in a standing position' वास्तव में यह जैन मुनियों के चित्र थे। क्योंकि बौद्ध धर्म में दिगम्बरत्व का कोई स्थान नहीं होता। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपने लेख 'मेरी तिब्बत यात्रा' में लिखा है कि उन्होंने तिब्बत यात्रा के दौरान अनेकों अवहेलित जैन मूर्तियाँ बन्द कमरे में पड़ी हुई देखी। जिनमें से कुछ के उत्कीर्ण लेखों को उन्होंने अपने विवरण में भी दिया है। 'History of Western Tibet' में एक

संक्षिप्त विवरण मिला है जिसमें पांच मूर्तियों की प्राप्ति का उल्लेख है जिनको जैन धर्म से अनभिज्ञ लेखक ने बौद्ध मूर्तियां बताया है। इनमें तीन मूर्तियों के नीचे सिंह, मोर और गरुड़ बने हुए हैं जो जिन मूर्तियों के प्रतीक हैं।

बचपन में जब मन्दिर जाती थी तो वहां तीर्थों के चित्र देखने में आते उनमें अष्टापद का काल्पनिक चित्र भी देखने में आया और ये जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि ये तीर्थ कहाँ पर है क्यों कि अन्य बड़े - बड़े तीर्थ प्राय सब देख और सुन रखे थे। माता-पिताजी से पूछा उन्होंने बताया कि तीर्थ लुप्त हो चुका है। समझ नहीं आया कि तीर्थ लुप्त कैसे होता है। पूछने पर यह बताया गया कि आज के कलयुग में ऐसे महत्वपूर्ण और पवित्र तीर्थ के मनुष्य को दर्शन नहीं हो सकते। अनेक प्रश्न मन में उठते रहे पर जिज्ञासा शान्त नहीं हुई क्यों कि समाधान नहीं था। अनेकों वर्षों बाद परम् पूज्य आचार्य प्रवर पद्मसागर सूरिश्वर जी महाराज के आशीर्वाद से कोबा के संग्रहालय में डॉ. बालाजी साहब से जैन धर्म के विषय में चर्चा हो रही थी। चर्चा करते करते उन्होंने अष्टापद कैलाश का एक चित्र दिखाया जिसे देखकर मन रोमांचित हो उठा और मैंने उनसे वह चित्र माँगा। उन्होंने मुझे भरत भाई शाह का पता व फोन नम्बर देकर उनसे सम्पर्क करने को कहा, और यहीं से मेरी जिज्ञासा के समाधान की खोज आरम्भ हुई जो आज भी जारी है। इस बीच इस विषय पर कुछ काम करने का मौका भी मिला। सन् १९९९ ई. में गुरुवर श्री पूज्यजी श्री जिनचन्द सूरि जी के आशीर्वाद से इस विषय पर तित्थयर पत्रिका का विशेषांक निकाला जिसमें भरत भाई शाह के कैलाश की तीन यात्राओं का अनुभव एवं उनके द्वारा लिये वहाँ के चित्र मेरे शोध कार्य का प्रमुख स्रोत रहे। इस विशेषांक को देखकर श्रद्धेय स्वर्गीय

भंवर लाल जी नाहटा साहब ने अष्टापद पर एक स्वतन्त्र किताब लिखने को कहा। वह हमेशा कहते थे कि आप यह काम आपको करना है। यह मेरा दुर्भाग्य रहा कि उनके सामने यह कार्य मैं पूरा नहीं कर सकी। आज उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि के रूप में यह शोध कार्य उनको समर्पित करती हूँ। इस शोध लेखन में महोपाध्याय विनय सागर जी, प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सागरमल जैन से मुझे बराबर मार्ग दर्शन मिला। डॉ. सागरमलजी ने तथ्यों की प्रामाणिकता के लिये किताब में मूल स्रोतों को ही आधार बनाने को कहा। फलस्वरूप इस किताब में ज्यादा से ज्यादा मूल स्रोतों से ही ऋषभदेव, और कैलाश, (अष्टापद) विषयक प्रमाणिक दृष्टान्त तथा उदाहरण लिये गये है। श्री दिलीप सिंह जी नाहटा ने पुराणों का पूरा संग्रह उसी समय मुझे मंगवाकर दिया। प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. सत्यरंजन बनर्जी के सहयोग से मुझे वेदों के अध्ययन करने का भी मौका मिला तथा ऋग्वेद में ऋषभदेव संबंधी ऋचाओं की जानकारी मिली। इस शोध पुस्तक की ग्रन्थ सूची तैयार करने में डॉ. सत्यरंजन बनर्जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वामी प्रणवानन्दजी और पाश्चात्य विद्वानों के कैलाश मानसरोवर यात्राओं के वर्णन उनकी किताबों के मूल प्रतियों से लिये गये जो मेरे चाचा जी श्री जी. सी. जैन ने मुझे उपलब्ध कराये थे । पाँच वर्षों के निरन्तर प्रयास के बाद यह शोध ग्रन्थ तैयार हुआ। यह दुर्भाग्य है कि आज इन शोध ग्रन्थों के महत्व से हमारा समाज बेखबर है तथा इन शोध ग्रन्थों के परखने की क्षमता का पूर्ण अभाव दिखता है। आज स्वयं के प्रचार और प्रशंसा में निकलने वाले समाचार पत्रों और उनके मुफ्त में वितरण करने वालों की सख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है परन्तु इन सबसे परे कुछ लोग ऐसे भी है जो धार्मिक प्रभावना में तन, मन, धन से

समर्पित है। ऐसे ही एक व्यक्ति है डॉ. रजनी कान्त शाह। जिन्होंने न्यूयार्क में जैन मंदिर का निर्माण कर उसमें अष्टापद बनवा रहे है। साथ ही अष्टापद से सम्बन्धित जैन और जैनेत्तर साहित्य का संकलन कर उसका प्रकाशन एवं सी. डी. निर्मित कराई है। विलुप्त हुए इस तीर्थ की खोज की दिशा में डॉ. रजनी कान्त शाह द्वारा दिनांक २८ मई सन् २००६ से २४ दिनों की अष्टापद. यात्रा का विशेष प्रारम्भ किया जा रहा है। जो एक अविस्मरणीय खोज यात्रा कही जा सकती है। आदि तीर्थंकर ऋषभदेव की निर्माण भूमि पर यह खोज यात्रा एक विलक्षण, अद्‌भुत अनुभव होगी जो कई तथ्यों के रहस्यों को उजागर करेगी ऐसा मेरा विश्वास है । इसके लिये डॉ. रजनी कान्त शाह और उनके सहयोगियों के प्रति समस्त जैन समाज कृतज्ञ रहेगा।

आदि तीर्थंकर ऋषभदेव और अष्टापद (२)

आज से दस साल पहले तक भारत की प्राचीनतम सभ्यता सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता मानी जाती थी और विद्वानों के अनुसार इसका समय २५००-३००० ई. पूर्व निश्चित किया गया था लेकिन विगत् दस वर्षों में सिन्धु नदी घाटी के और स्थानों में व्यापक रूप से खुदाई में जो अवशेष और सामग्री प्राप्त हुई है उससे विद्वानों का अनुमान है कि यह सभ्यता ७००० ई. पूर्व यानि आज से ९००० साल पुरानी है तथा विश्व की मान्य प्राचीनतम सभ्यताओं में अग्रणी है। The prehistory of the Indian subcontinent (or India for short) began at Mehrgarh in Baluchistan in about 7000 B.C. with the transition from hunting, food gathering and nomadism to agriculture, animal husbandry and village life. (The Vadic People-Rajesh Kochar, p. 58).

मानव सभ्यता का प्रारम्भ कैसे हुआ, कब हुआ, इस सन्दर्भ में सभी प्राचीन संस्कृतियों, धर्मों में जो उल्लेख मिलते है उन सबका मूल लगभग एक ही मालूम पड़ता है। विद्वानों ने समय-समय पर इस विषय में अपनी-अपनी खोजों के द्वारा विभिन्न मत दिये है पर अधिकतर विद्वानों का मत है कि मानव सभ्यता का प्रारम्भ हिमालय में हुआ। प्रसिद्ध भूगर्भ विशेषज्ञ मेडलीकर, ब्लैन्फर्ड और लैम्पबर्स ने हिमालय को आदिमानव का मूल स्थान माना है। नाइजीरिया के जिऑलोजी के प्रो. एल वी हौलस्टीड मानवीय सभ्यता का उद्‌गम हिमालय से मानते है पार्जिटर महोदय के अनुसार कैलाश के निकट ही मानव सभ्यता का प्रारम्भ हुआ।

मनुष्य की प्रवृत्ति सदा से ही खोज की रही है और इसी के परिणाम स्वरूप ये खोजें आज भी जारी है। इसी सन्दर्भ में कैलाश और अष्टापद के रूप में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण वर्णन जैन शास्त्रों में मिलता है जिसके अनुसार आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के निर्वाण स्थल अष्टापद कैलाश को माना गया है। अतः कैलाश या अष्टापद की खोज मानव संस्कृति के मूल स्रोत को जानने में एक महत्वपूर्ण प्रमाणिक जीवन्त दस्तावेज है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों, कथाओं, चित्रकारियों में, परम्पराओं, धार्मिक क्रियाओं में, अष्टापद और कैलाश का वर्णन जहाँ कही भी मिला हमने उसे जन मानस के समक्ष रखने का प्रयास किया है जिससे कि मानव सभ्यता के मूल स्रोत का सही रूप से आंकलन किया जा सके।

हमारे पूर्वज आगम रचनाकार भी कैलाश से परिचित थे। प्राचीन ग्रन्थ उत्तराध्ययन सूत्र में कैलाश पर्वत का उल्लेख स्वर्ण और रजत पर्वत के रूप में मिलता है।

सुवएण रूप्पस्स उ पब्बया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया।
णरस्स लुद्धस्स ण तेहि किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणंतिया ।।४८।।

यदि कैलाश पर्वत के समान सोनें चाँदी के असंख्य पर्वत हो जाए तो भी मनुष्य को संतोष नहीं होता, क्योंकि इच्छा तो आकाश की तरह अनन्त है। (उत्तराध्ययन अ. - ६)

कवि कल्हण की राजतरंगिनी में महाभारत के समय में काश्मीर के राजा के रूप में गोनन्द प्रथम का उल्लेख मिलता है। इसी सन्दर्भ में कल्हण ने लिखा है—

"कश्मीरेन्द्रः स गोनन्दो वेल्लग्दंगादुगूलया।
दिशा कैलासहासिन्या प्रतापी पर्युपास्यत।।५७"

The Glorious king of Kasmir Gonanda was worshipped by the (Northern) region which Kailas lights us (with its dazzling snow) and which the tossing Ganga clothes with a soft Garment (Kalhan's Rajtarangini-- M.A. Stein first Book pg. 12 श्लोक 57)

आज से लगभग २६०० वर्ष पूर्व अष्टापद के संदर्भ में भगवान् महावीर ने गणधर गौतम को बताया था कि जो अपने तप के बल से अष्टापद की यात्रा करेगा वह निश्चित ही इसी भव में मुक्ति प्राप्त करेगा यह सुनकर गौतम स्वामी ने अष्टापद की यात्रा की और वहाँ पर कण्डरिक–पुण्डरिक अध्ययन की रचना करके वज्रस्वामी के जीव को प्रतिबोधित किया—

वयरसामि नउ जीव, तिर्यग् जृम्भक देव तिहां,
प्रतिबोध्या पुंडरिक, कंडरीक अध्ययन भणो।

उसी रात्रि में वज्रस्वामी का जीव जो उस समय तिर्यग् जृम्भक देव था, वह ध्यानावस्थित गौतम स्वामी के निकट आया और गौतम स्वामी ने पुण्डरीक-कण्डरीक की कथा के माध्यम से उसे प्रतिबोधित किया। ठीक इसी प्रकार कुछ परिवर्तन के साथ ब्रह्म पुराण में भी गौतम ऋषि के कैलाश जाने और वहाँ पर उमा-महेश्वर स्तवन की रचना का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है।

गौतमकृतमुमामहेश्वरस्तवन :

कैलाशशिखरं गत्वा गौतमो भगवानृषिः ।
किं चकार तपो वाऽपि कां चक्रे स्तुतिमुत्तमाम् ।१
गिरिं गत्वा ततो वत्स वाचं संयम्य गौतमः ।
आस्तीर्य स कुशान्प्राज्ञः कैलासे पर्वतोत्तमे ।२
उपविश्य शुचिर्भूत्वा स्तोत्रं चेदं ततो जगौ ।
अपतत्पुष्पवृष्टिश्च स्तूयमाने महेश्वरे ।३

भोगार्थिनां भोगमभीप्सितं च, दातुं महान्त्यष्टवपूंषि धत्ते ।
सोमो जनार्ना गुणवप्तिनित्यं, देवं महादेवमिति स्तुंवन्ति ।४
कर्तु स्वकीयैर्विषयैः सुखानि, भर्तु समस्तं सचराचरं च।
सपत्तये ह्यस्य विबृद्धये च, महोमयं रूपमितीश्वरस्य ।५
सृष्टेः स्थितेः संहरणाय भूमेराधारमाधातुमपां स्वरूपम् ।
भेजे शिवः शान्ततनुर्जनानां, सुखाय धर्माय जगत्प्रतिष्ठितम् ।६
कालव्यवस्थाममृतस्रवं च, जीवस्थितिं सृष्टिमथो विनाशनम् ।
कर्तुं प्रजानां सुखमुन्नतिं च, चक्रेऽर्कचन्द्राग्निमयं शरीरम् ।७

श्री नारदजी ने कहा—भगवान गौतम ऋषि ने कैलास के शिखर पर पहुँचकर क्या किया था? क्या कोई वहाँ पर उन्होंने तपस्या की थी अथवा कौन सी उत्तम स्तुति की थी? ।१। श्री ब्रह्माजी ने कहा—हे वत्स! फिर उस कैलास पर जाकर उस गौतम ने वाणी का सर्व प्रथम संयम किया था। फिर उस पर्वतों में परम श्रेष्ठ कैलास पर उस परम प्राज्ञ गौतम ने कुशाओं को फैला दिया था। उस स्थल पर वह उपविष्ट हो गये और पवित्र होकर उन्होंने इस नीचे बताये जाने वाले स्तोत्र का गान किया था। इस प्रकार से महेश्वर प्रभु की स्तुति करने पर नभोमण्डल से पुष्पों की वृष्टि हुई थी ।२-३। गौतम ने इस प्रकार से महेश्वर की स्तुति करते हुए कहा— हे भगवन् ! आप भोगों के अभिलाषा रखने वाले अपने भक्तों को उनका अभीष्ट भोग प्रदान करने के लिए महान् आठ वपुओं को धारण किया करते हैं। आप उमादेवी के सहित अपने जनों के लिए ही नित्य उन गुणों से युक्त आठ शरीरों को धारण करते हैं। सभी उनका देव-महान देव है— ऐसा स्तवन किया करते हैं ।४। आप अपने विषयों के द्वारा सुखों का संबंधन करने के लिए तथा इस सम्पूर्ण चराचर विश्व का भरण करने के वास्ते और इस विश्व की सम्पत्ति एवं विशेष वृद्धि के लिये ईश्वर आपका यह महीमय ही स्वरूप है ।५। शिव प्रभु सृजन-स्थिति-और संहार के

लिये भूमि के आधार को रखने के वास्ते आप जल के स्वरूप को धारण किया करते हैं। शान्त स्वरूप वाले भगवान शिव अपने भक्तजनों के सुख तथा धर्म के लिए ही जगत् में प्रतिष्ठित रहा करते हैं ।६। इस काल की व्यवस्था को-अमृत के श्रवण की-जीवों की स्थिति-सृष्टि और विनाश-प्रजाओं को आनन्द-सुख और उन्नति को आपका चन्द्राग्निमय शरीर किया करता है ।७।

विविध तीर्थकल्प, त्रिशष्टि शलाका पुरुष चरित्र, श्री धर्मघोष सूरि द्वारा रचित अष्टापद महातीर्थ कल्प आदि अनेक जैन ग्रन्थों में रावण द्वारा अष्टापद पर जिनेश्वर भक्ति करने का उल्लेख मिलता है। रावण द्वारा अष्टापद (कैलाश) पर तपस्या करने का वर्णन Thomas Maurice ने भी किया है उन्होंने लिखा है कि "The tyrant of seventh Avatar was Rawan, who according to Ayeen-Akbary ' having ten heads and as many hands, spent ten thousand (lunar) years, on the mountain of Kylass, in worshpping God, and devoted ten of his heads, one after the other, in hopes of obtaining, for his final reward, the anonarchy of the three regions'. (The History of Hindostan As connected with other Great Empires of Asia by Thomal Maurice, vol-2, p. 234).

जैन शास्त्रों में रावण को आनेवाले उपसर्पिणी काल के २४तीर्थंकरों में स्थान दिया गया है। जैनेत्तर ग्रन्थों में रावण का अनार्य और राक्षस रूप में वर्णन मिलता है। यह कहा जाता है कि कुलपाक तीर्थ में ऋषभदेव स्वामी की प्रतिमा का पौराणिक इतिहास अष्टापद से सम्बन्धित है जिसकी पूजा रावण ने लंका में लाकर की थी। इसी से कुछ मिलता जुलता वर्णन हमें राजतरंगिणी के तीसरे खण्ड में मिलता है।

तां विष्णुप्रतिमां तच्च लिंगमीशानपूजितम्।
स्वयं प्रजासृजः पूज्यं कालेनादत्त रावणः।।४४६
तेनाप्यभ्यर्च्यमानं तल्लंङायामभवच्चिरम्।
देवद्वयं रावणान्ते नीतमासीच्च वानरै :।।४४७
तिर्यक्तया ते कपयो मुग्धा हिमनगौकसः।
शान्तौत्सुक्याः शनैर्देवौ न्यधुरुत्तरमानसे।।४४८
दिव्यैः प्रसूनैः संवीतौ हरनारायणौ जनः।
प्रातर्नृपगृहे दृष्टाव परं विस्मयमाययौ।।४५२

"That image of *Visnu* and that Linga which *Siva* had worshipped and which deserved to be worshipped by the Creator (Prajapati) himself, came in the course of time into *Ravana's* possession." The two images which *Ravana* also worshipped, were long at *Lanka,* and were at his death carried away by the monkeys." "The monkeys which lived on the *Himalaya* mountain, stupid as beasts are, after satisfying their curiosity, dropped the (images of the) two gods in the *Uttaramanasa [Lake].*" In the morning the people seeing the [images of] *Hara* and *Narayana* covered with divine blossoms at the royal residence were utterly astonished.

राक्षस ताल के विषय में एक और मान्यता प्रचलित है— रावण की कैलाश पर की गई तपस्या से प्रसन्न होकर शिव के वरदान मांगने पर रावण ने कहा था— Ravan asked that the lord should come and reside in his kingdom, Lanka. Leaving the Kailash Valley, The Lord agreed and offered himself to Rawana as a lingam (sacred phallus) subject to one condition that Rawana cannot keep him down on the earth

any where on the way. The Gods in the heaven were worried. How can they let the lord leave His abode. They instructed the God of water, Varuna, to enter Ravana's stomack. When he started walking with the heavy siva lingam, Ravana felt that he had to ease himseft urgently. But how (could) he do so without putting down the heavy Lingam. He searched for someone (to carry it for him for a) time. He spotted a young Brahmin and request him to hold the lingam. The Brahmin Lad, who was none other than Lord Ganesha agreed. But since the God of water himself had inhabited Ravana's (belly) there was a continuous flow of water out of Ravana. Which formed this lake Raksasa tal (also called Ravan tal) Since Ravana was delaying, his return, the Brahmin could not hold the Lingam any longer and put in down. Thus the Holy Lingam in the form of the Kailash remained in its original place.

तिब्बती मान्यता के अनुसार— Hanuman child of wind, Vayu, is prince Rama's friend. He was sent on a mission to fetch the Sanjiwini herb. This Panacea would be able to restore the dying and even those already dead . In desperation, frustration or just because he could, when unable to identify, the magical plant, Hanuman picked up the moutain and brought it entire to Lanka. When enough herbs were collected, he tossed the mountain back in the direction where he got it, but it landed in such a way that the snow off Tiseh (Kailash) dropped into Tibet.

मानसरोवर के विषय में तिब्बती मान्यता के अनुसार— Tibetains say that when the world emperor (Chakravartin) Nug Bam was cooking rice to feed the entire world, the hot water that was strained from the pot cooled and became the lake.

For Hindus Kailash is the Sumeru Parvat the spiritual centre of the world around which the earthly powers resolve.

Kailash Mansarovar is the abode of Lord Siva, Parvat, Ganesha and Subramuniya. (Kailash Mansarovar, Diary of a Pilgrim).

High place always symbolized the spiritual quest, Probably because they seem closes to, and therefore best suited for peoples communication with heavenly beings.

In India the iconic representation of the male organ is the lingam, a pillar that usually represents Shiva, the most potent of made duties Shiva is worshipped in that form as a consequence of a curse by the sage, Bhrigu who he had slighted. (Swami Satchidananda)

Any remarkable local mountain is viewed as the center of the world. Mount Kailash is not one of the giant, but it stands prominently in a remate south west corner of Tibet, as amazingly symmetrical 22,028 foot striated pyramid with a diogonal gosh on one of its faces. It was described by Julion West of UK's The Daily Telegraph (May 27, 2001) is that "..... compelling, dome

shaped peak, rising above a desolately beautiful 13,000, ft. plateau of rainbow - coloured rocks.....

Distinctively Marked and dramatically centred between two smaller peaks, the 6,714 metre peak is believed to be the actual home of Lord Shiva. It is also the sacred seat of Rishabha (Adinath) founder of the Jain religion and Ist of 24 Tirthankaraś. Buddhists believe that poet Yogi, Milarepa (11th C.) is the only human being to have stood on its peak, a feat he accomplished by flying there.

In Tibeton, Kailas is called 'King Rinpoche', or the precious Mt. The Bon [pron. pein] call it yung drung Gu-tzeg '9-storey swastika' because on the south face of Kailash can be seen a swastika [Skt: self Manifested mark] which, until the 20th century was purely a universal symbol of prosperity, auspiciousness, and rebirth.

This peak is also viewed as the earthly manisfestation of mount Sumeru or Meru as it is also Known. Sumeru is considered the actual focus - the absolute central point of the Mandala. That is universal. Some scholars think that the name Sumeru is a reference to the ancient Kingdom of Sumeru that lay far to the west in Mesopotamia-perhaps humanity's first city.

Antonio Andrade, an early 17th century Jesuit missionary to the court of Akbar, the mogul emperor, and also to the Tibetan Kingdom of Guge, was the first Europeon to record a view of the peak. It was then forgotten by

Europeans until young husbands British expedition came upon it in the early 19th century.

"Guiseppe Tucci, the interpid Italian scholar, one of the first westeners to describe the temples and the tangkas of Tibetan civilization, while visiting Kailash in the 1930 wrote that it was "the navel of the world the ladder which links heaven and earth, and the great rock crystal palace of 360 Gods" (World Tibet Network News Published by the Report.)

"A journey to the holiest of Buddhist mountain is no cup of butter tea"

For Hindus who refer to Kailash as mount Sumeru, the mountain is the abode of shiva the destroyer. For Buddhists like me it is the place where all Buddhas dwell. To walk around it once with the right motivation - for it is unthinkable in Tibetan culture to conquer a mountain by Climbing it - is said to allow the pilgrim to wipe out the sins of a lifetime.

C Hillon : Extract from two books on the topic of Kailash and its water. According to Chain's-- "A pilgrimage Guide to Tibet", Unlike Hindu, Jain and Buddhist pilgrims. Bon people proceed in a counter clockwise fashion, contrary to the others.

'Mount Kailsah is also the residence of Kubera, God of wealth who is chief among the Yakshas or worldly spirit.

For Buddhist, Tiseh (Kailash) or Kaiva Karpo (white pillar) is the abode of Chakrasamvara (Tibetan : Dem chog) whose name is infact an epithet of shivas.

In1939 a Swiss matron named Elizabeth Caspari visited the Hemis monastery while on a Pilgrimage to mount Kailash. she was one of a small group in the company of Mrs Clarence Gasque, the President of an organisation called the World Association of Faith. (Jesus in India).

In a far corner of western Tibet reses the awe inspiring snowy peak of Mount kailash. To Hindu & Buddhist Pilgrims this is Tibet secret mountain. It is the Throne of the Gods where this world and the eternal unite and where every aspect of the landscape has a divine nature. (Mount kailash and the wonderful by P.C. Bodh).

To Tibetan Buddhist Mount Kailash in the most magical place on earth a place where one's prayer are answered instantly. The Journey to the diamond shaped peak is arduous, as it is located in the heart of the world's tallest mountains ! Yes it is well worth the effort, for according to tradition, one trip around the secret mountain at 17,500 feet can wipe away the sins of a life time. (Circling the Sacred mountain -A spiritual Adventure through the Himalayas by Robert Thurman with Tad Wise 1999.

शिवपुराण के एक श्लोक में लिखा है—
वेधा विधाता धाता व सृष्टा हर्त्ता चतुर्मुखः।
कैलाश शिखरावासी सर्वावासी सदागतिः।। १०६ (शिव पुराण)

इस जगत की उत्पत्ति करने के कारण वेधा नाम वाले, संसारिक मानवों के कर्म तथा उनके फल का दान करने के कारण विधाता कहे गये हैं और विविध रूप से समस्त जगत को धारण करने के कारण धाता हैं— यहाँ ये तीनों शब्द एक ही नाम के बोधक हैं। सृष्टा–जगत के सभी कर्मों को सिखाने वाले । हर्त्ता– कर्म को क्षय करने वाले। चतुर्मुख– हिरण्यगर्भ स्वरूप में अवस्थित। कैलाश शिखरवासी– कैलास नामक गिरि की चोटी पर निवास करने वाले। सर्वावासी—सब में अन्तर्यामी स्वरूप में वास करने वाले सदागति सब जीवों को गति देने वाले।

शिवपुराण का यह वर्णन भगवान् ऋषभदेव के व्यक्तित्व का सटीक दिग्दर्शन कराता है क्योंकि भगवान् ऋषभदेव ने मानवता को इस लोक के साथ-साथ परलोक को भी सुखद-सुन्दर और अन्ततोगत्वा शाश्वत सौख्यपूर्ण बनाने के जो मार्ग बताये वे दोनों ही मार्ग न केवल मानव मात्र ही अपितु प्राणिमात्र के लिये वरदान स्वरूप सिद्ध हुए। उनके द्वारा आविर्भूत की गई लोकनीति और राजनीति जिस प्रकार किसी वर्ग विशेष अथवा व्यक्ति विशेष के लिये नहीं अपितु समष्टि के हित के लिये थी, उसी प्रकार उनके द्वारा स्थापित धर्ममार्ग भी प्राणिवर्ग के कल्याण के लिये–समष्टि के कल्याण के लिये था। यही कारण था कि भगवान् ऋषभदेव द्वारा मानव के इहलौकिक हित के लिये स्थापित की गई नीति लोकनीति के नाम से और उनके द्वारा समष्टि के आध्यात्मिक अभ्यत्थान के लिये प्रकट किया गया धर्ममार्ग विश्वधर्म अथवा शाश्वत धर्म के नाम से त्रैलोक्य में विख्यात हुआ। जिस प्रकार भगवान् ऋषभदेव द्वारा संस्थापित लोकनीति किसी वर्ग, जाति,

प्रान्त अथवा देश विशेष के लिये नहीं किन्तु सम्पूर्ण मानव समाज के हित के लिये थी, उसी प्रकार उनके द्वारा प्रकट किया गया धर्म भी समष्टि के– विश्व के कल्याण के लिये, आध्यात्मिक उत्थान के लिये था। उनके द्वारा प्रकट किया गया धर्म विश्वधर्म था। यही कारण था कि युगादि के सम्पूर्ण मानव समाज ने भगवान् ऋषभदेव द्वारा स्थापित लोकनीति को, धर्म को सर्वसम्मति से समवेत स्वरों में शिरोधार्य कर स्वीकार किया। युगादि के मानव समाज द्वारा स्वीकार किये गये, सर्वात्मना-सर्वभावेन अंगीकार किये गये उस विराट् विश्वधर्म का नाम सब प्रकार के विशेषणों से रहित केवल धर्म ही था। भगवान् ऋषभदेव द्वारा निखिल विश्व के प्राणिमात्र के कल्याण के लिये स्थापित किया गया और युगादि के अखिल मानव समाज द्वारा शिरोधार्य किया गया वह विराट् विश्व धर्म कोट्यानुकोटि शताब्दियों, पीढ़ी-प्रपीढ़ियों तक लोक में शाश्वत् धर्म, नित्य धर्म अथवा ध्रुव धर्म के नाम से अभिहित किया जाता रहा और उसी के परिणामस्वरूप सार्वभौम लोकनायक, सार्वभौम धर्मनायक के रूप में भगवान् ऋषभदेव की कीर्ति सम्पूर्ण लोक में व्याप्त रही। यही कारण है कि भारत के प्राचीन धर्मग्रन्थों में भगवान् ऋषभदेव को धाता, भाग्य-विधाता और भगवान् आदि लोकोत्तम अलंकारों से अलंकृत किया गया है। (आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज)

श्री लामचीदासजी गोलालारे ने मेरी कैलाश यात्रा में तिब्बत में जैन लोगों एवं जिन मंदिरों के होने का स्पष्ट उल्लेख किया था। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने उस समय की यथा स्थिति का वर्णन किया था जिसकी पुष्टि तिब्बत के प्राचीन इतिहास से होती है। अभी हाल में ईसा से चौदहवीं शताब्दी पूर्व में तिब्बत में Jian नाम की जाति के लोग रहते थे। Jian शब्द Jain का ही पर्यायवाची है।

दोनों की उत्पत्ति Jin से हुई है और दोनों का अर्थ है विजेता या जीतने वाला (Conqueror) यह विषय गहन संशोधन का है।

प्रसिद्ध लेखक "Bruno Baumann" ने १३ बार कैलाश पर्वत की परिक्रमा की और उनकी किताब "Kailas : Tibet's Holy Mountain" को सन् २००२ में "Best Travel Book" का इनाम मिला है। उनके अनुभव एवं उनकी किताब के विषय में एक रिपोर्ट प्रस्तुत है —

The sudden revving of the engine jolted me awake. "So begins Bruno Baumann's newest book On Spirit Grounds-Kailash: Tibet's Sacred Mountain, and so begins the reader's journey into an exclusive world of spirit and beauty otherwise foreclosed to all but the most adventurous of souls. On Spirit Grounds is a masterful resume of more than a dozen of the Austrian writer-adventurer Bruno Baumann's expeditions into the wilds of western Tibet, showcasing the region's natural beauty and rich cultural heritage...

In addition to illustrating the different religious practices of the local cultures, the book conveys a real sense of the spiritual significance of Mount Kailash, which is only reinforced by Baumann's sobering accounts of his own arduous expeditions there... Bruno Baumann is an adventurer and an explorer in the very best sense of the word. He approaches the world with curiosity, energy, passion, and ambition, moving from one challenge to the next, and writing about his experiences

along the way... A superb journalist, Baumann's book is brilliantly researched and loaded with information. The text is exceptionally well written, making for an entertaining and absobing read from start to finish...

Baumann mounted expeditions to each of the four greatest rivers in Asia and to their sources near Mount Kailash, the precious snow jewel of the Himalayas. He describes the matchless beauty of the landscape in every detail, writes about his personal encounters, and at the same time describes the day-to-day rigors he and his team faced exploring the isolated and often perilous terrain along thē upper courses of the Indus, Sutlej, Karnali, and the Brahmaputra Rivers... In addition to Mount Kailash itself, the book describes other important cultural sites in western Tibet, such as Tholing, Purang, Tirthapuri and the great Barka Plain; it also offers an informative account of his travels to the two sacred lakes, Raksas Tal and Manasarovar, where he completed the lesser-known, but no less arduous, ritual circuit around Manasarovar Lake...

It took Bruno Baumann nearly two decades to complete the 13 outer ritual circuits (kora) of Mount Kailash required by sacred tradition to gain entry to the "inner kora", the pilgrim route leading to the mountain's innermost sanctum. Running along the base of the south face of Mount Kailash, where the Vajra scepter rises up as a symbol of the indestructible marking the center

of the natural mandala, the inner kora is the holiest of all pilgrim trails. Because most lay pilgrims are too in awe of the sanctity of these grounds, the inner kora is a road rarely traveled except by the most experienced adepts and Buddhist practitioners. Baumann's work represents the first and only written account in existence of this ultimate pilgrim route, and for this fact alone is a must-read...

"Kailash-Tibet's Holy Mountain" is the result of Bruno Baumann's many years of exploring the Tran Himalayas. In this book, he makes his advance toward the mountain from which the four greatest rivers of Asia spring & flow to the four corners of the Earth - geographically, historically, mythologically, & with almost religious photography. Bruno Baumann is one of the foremost experts on Tibet. With this book, he's published a work that not only impresses with its solid, in-depth research, but which also gives insight into the soul of the author. "Walk on, walk on!" was the message Buddha passed on to his pupils. Perhaps that is the message Kailash holds for us as well, that is, to view life as one long pilgrimage, a never-ending search.

At the origin of the Indus, the Tsangpo-Brahmaputra, the Sutlej & the Karnali, the incredible wonder of this region of the world opened to him, where four great rivers spring forth & flow to the four corners of the earth from a single mountain. Kailash itself, this 'natural

m&ala', had been worth enough to him to complete the 13 arduous circumambulations, which Tibetan religious powers require before a pilgrim may gain entrance into the inner circle ('inner Kora'). Yet even with his goal in sight, an overwhelming respect & awe for the holiness of that innermost realm prompted him to turn back at the foot of Mount N&i. The geogfaphical & cultural experience takes center stage in this book, but Baumann also knows how to showcase with due respect those who accompanied him along the way-the pilgrim woman from Amdo, walking with her child across the cold of Western Tibet, the ascetic French woman traveling with a group of pilgrims like a living reincarnation of Alex&ra David-Neel, or the 'Milk-Baba' from Kathm&u. These are just a few of the players on the great stage of Kailash, from which visitors from a "disenchanted" western world can share in the magic. Bruno Bruno Baumann's ability to reach into the soul of the reader with his words & convey his own personal feelings about this spiritual wonder of nature is just one of the amazing things about this book... that it also presents the texture, colors & images of this far-off corner of the world in almost 200 magnificent photos is more than anyone should be allowed to expect from a travel book."

Bruno Baumann, author, photographer & filmmaker, followed the pilgrim's route. He spent over 10 years exploring the entire region of this natural m&ala &

trekked to the sources of the four great rivers. Over thous&s of miles, much of it on foot, he followed the courses of the Indus and the Brahmaputra, the Karnali & the Sutlej. Along the way, he encountered many men & women, & questioned them about their religious rituals & the holy sites in the region surrounding Kailash. He broadened his geographic underst&ing of the region to include a 'map of faith', which charted the sacred sites of the pilgrims. Baumann wanted to know what it was about Mount Kailash that made it the center of worship for four different world religions. To find the answer, the widely traveled adventurer completed 13 ritual circumambulations in accordance with ancient pilgrim tradition, thus gaining entry into the most sacred inner circle, the 'inner Kora' of Kailash.

The almost 200 photos in Bruno Baumann's book about Tibet's holiest mountain convey to those who have never traveled to Tibet something of the atmosphere of Kailash & the pilgrim spirit. It is clear in reading Baumann's accounts of his travels that this was not just some adventurer getting his kicks out of strolling the pilgrims' trail because it's 'cool', but rather a man who is there for his own very private purpose.

स्वामी सच्चिदानन्दजी ने अपनी कैलाश यात्रा का विवरण कैलाश जरनल में लिखा है जिसकी एक रिपोर्ट–

"As the afternoon wore on, the river passed far behind us and my legs started to ache with fatigue. Soon they

were begging me to let them rest. When a free mule came by. I mounted it. A heavy rain suddenly started to fall, and I opened my unbrella. The mule was walking slowly beneath some tress. When I closed the umbrella to duck under a low branch, the animal became alarmed and jumped ahead. I fell down on a rock and called out 'Hari Om.' My breathing stopped and I could feel the life rapidly departing from my body. I knew that I faced death..."

So wrote Swami Satchidananda - a man with nine lives- in the 1958 diary he kept of his arduous sixty-foot pilgrimage to Mt. Kailash, a 22,000-foot Lingam - like peak of flecked granite and marble snow that is the ultimate Hindu geology. The swami, lying crumpled and bleeding on the rocks on his way down from Kailash, willed himself to breathe. He survived, his great woolly beard none the worse. Within a decade this spirited soul would found the successful Integral Yoga Institute in America.

Actually, Swamiji went toe to toe with death twice on his odyssey of muscle, lungs and yoga, testimony to the fact that the Kailash pilgrimage is the world's most challenging journey to a sacred site. Yet, in the inverse ratio of spiritual effort, Kailash is also Earth's most rewarding locale for consciousness transformation. The Tibetan Buddhists have built four monasteries around the peak.

Swamiji's diary is a quick, homely, elevating record of life on the Kailash trail. It is like a home movie-the writing wobbles out of scanty scene description into the comic antics of the mules and mulepackers into the swami's ingenuous attempts to tell us how the pilgrimage is affecting him mystically. This is not a grippingly told adventure story, nor a vividly written spiritual odyssey. It is a charming and rare record of high - 19,000 feet literally - pilgrimage and is packed full of facts, conversation with interesting mountain folk, insight and lore. The book includes a large number of the swami's own pilgrimage photos.(Kailash Journal-Swami Satchidananda).

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139; (Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO
MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

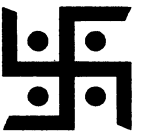

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 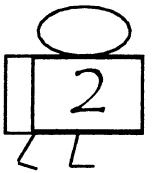 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbi eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road.
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design, Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 1
25th April 2006

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 071/2004-06
R.N.I. 3018/77

Registered
No SSRM/KOL./RMS/WB/RNP-071/2004-06
RNI No 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225